قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ وَ لَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾

कितना कम यक़ीन रखते हो[45] और न किसी काहिन की बात[46] कितना कम ध्यान करते हो[47]

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾ وَ لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ﴿٤٤﴾

उस ने उतारा है जो सारे जहान का रब है और अगर वोह हम पर एक बात भी बना कर कहते[48]

لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿٤٥﴾ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَمَا مِنْكُمْ

ज़रूर हम उन से ब क़ुव्वत बदला लेते फिर हम उन की रगे दिल काट देते[49] फिर तुम में कोई

مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَ اِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾ وَ اِنَّا

उन का बचाने वाला न होता और बेशक येह क़ुरआन डर वालों को नसीहत है और ज़रूर हम

لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَ اِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَ

जानते हैं कि तुम में कुछ झुटलाने वाले हैं और बेशक वोह काफ़िरों पर हसरत है[50] और

اِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٥١﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٥٢﴾ ع

बेशक वोह यक़ीनी ह़क़ है[51] तो ऐ मह़बूब तुम अपने अ़ज़मत वाले रब की पाकी बोलो[52]

اٰيَاتُهَا ٤٤ | ٧٠ سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ ٧٩ | رُكُوْعَاتُهَا ٢

सूरए मआ़रिज मक्किय्या है, इस में चवालीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ﴿١﴾ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ﴿٢﴾ مِّنَ اللّٰهِ

एक मांगने वाला वोह अ़ज़ाब मांगता है जो काफ़िरों पर होने वाला है उस का कोई टालने वाला नहीं[2] वोह होगा अल्लाह की

45 : बिल्कुल बे ईमान हो, इतना भी नहीं समझते कि न येह शे'र है न इस में शे'रिय्यत की कोई बात पाई जाती है **46 :** जैसा कि तुम में से बा'ज़े काफ़िर इस किताबे इलाही की निस्बत कहते हैं। **47 :** न इस किताब की हिदायात को देखते हो न इस की ता'लीमों पर ग़ौर करते हो कि इस में कैसी रूह़ानी ता'लीम है न इस की फ़साह़तो बलाग़त और ए'जाज़े बे मिसाली पर ग़ौर करते हो जो येह समझो कि येह कलाम **48 :** जो हम ने न फ़रमाई होती तो **49 :** जिस के काटते ही मौत वाक़ेअ़ हो जाती है। **50 :** कि वोह रोज़े क़ियामत जब क़ुरआन पर ईमान लाने वालों का सवाब और इस के इन्कार करने वालों और झुटलाने वालों का अ़ज़ाब देखेंगे तो अपने ईमान न लाने पर अफ़्सोस करेंगे और ह़सरत व नदामत में गिरिफ़्तार होंगे। **51 :** कि इस में कोई शको शुबा नहीं। **52 :** और उस का शुक्र करो कि उस ने तुम्हारी त़रफ़ अपने इस कलामे जलील की वह़्य फ़रमाई। **1 :** सूरए मआ़रिज मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, चवालीस 44 आयतें, दो सो चौबीस 224 कलिमे, नव सो उन्तीस 929 ह़र्फ़ हैं। **2 : शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जब अहले मक्का को अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाया तो वोह आपस में कहने लगे कि इस अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ कौन लोग हैं और येह किन पर आएगा ? सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ذِی الْمَعَارِجِ ۝۳ تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَیْهِ فِیْ یَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ

त़रफ़ से जो बुलन्दियों का मालिक है[3] मलाएका और जिब्रील[4] उस की बारगाह की त़रफ़ उ़रूज करते हैं[5] वोह अ़ज़ाब उस दिन होगा

خَمْسِیْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۝۴ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِیْلًا ۝۵ اِنَّهُمْ یَرَوْنَهٗ

जिस की मिक़्दार पचास हज़ार बरस है[6] तो तुम अच्छी त़रह़ सब्र करो वोह उसे[7] दूर

بَعِیْدًا ۝۶ وَّنَرٰىهُ قَرِیْبًا ۝۷ یَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۝۸ وَتَكُوْنُ

समझ रहे हैं[8] और हम उसे नज़्दीक देख रहे हैं[9] जिस दिन आस्मान होगा जैसी गली चांदी और

الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝۹ وَلَا یَسْـَٔلُ حَمِیْمٌ حَمِیْمًا ۝۱۰ یُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ یَوَدُّ

पहाड़ ऐसे हलके हो जाएंगे जैसे ऊन[10] और कोई दोस्त किसी दोस्त की बात न पूछेगा[11] होंगे उन्हें देखते हुए[12] मुजरिम[13]

الْمُجْرِمُ لَوْ یَفْتَدِیْ مِنْ عَذَابِ یَوْمِىٕذٍۭ بِبَنِیْهِ ۝۱۱ وَصَاحِبَتِهٖ وَ

आरज़ू करेगा काश इस दिन के अ़ज़ाब से छुटने के बदले में दे दे अपने बेटे और अपनी जोरू और

اَخِیْهِ ۝۱۲ وَفَصِیْلَتِهِ الَّتِیْ تُـْٔوِیْهِ ۝۱۳ وَمَنْ فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا ۙ ثُمَّ

अपना भाई और अपना कुम्बा जिस में उस की जगह है और जितने ज़मीन में हैं सब फिर येह बदला

یُنْجِیْهِ ۝۱۴ كَلَّا ؕ اِنَّهَا لَظٰى ۝۱۵ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ۝۱۶ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَ

देना उसे बचा ले हरगिज़ नहीं[14] वोह तो भड़क्ती आग है खाल उतार लेने वाली बुला रही है[15] उस को जिस ने पीठ दी और

تَوَلّٰى ۝۱۷ وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ۝۱۸ اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ۝۱۹ اِذَا مَسَّهُ

मुंह फेरा[16] और जोड़ कर सैंत रखा (मह़फ़ूज़ कर रखा)[17] बेशक आदमी बनाया गया है बड़ा बे सब्रा ह़रीस जब उसे बुराई

से पूछो, तो उन्हों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया, इस पर येह आयतें नाज़िल हुईं और हुज़ूर से सुवाल करने वाला नज़्र बिन ह़ारिस था, उस ने दुआ़ की थी कि या रब ! अगर येह क़ुरआन ह़क़ हो और तेरा कलाम हो तो हमारे ऊपर आस्मान से पथ्थर बरसा या दर्दनाक अ़ज़ाब भेज, इन आयतों में इर्शाद फ़रमाया गया कि काफ़िर त़लब करें या न करें अ़ज़ाब जो उन के लिये मुक़द्दर है ज़रूर आना है, उसे कोई टाल नहीं सकता **3 :** या'नी आस्मानों का। **4 :** जो फ़िरिश्तों में मख़्सूस फ़ज़्लो शरफ़ रखते हैं **5 :** या'नी उस मक़ामे क़ुर्ब की त़रफ़ जो आस्मान में उस के अवामिर का जाए नुज़ूल है। **6 :** वोह रोज़े क़ियामत है जिस के शदाइद काफ़िरों की निस्बत तो इतने दराज़ होंगे और मोमिन के लिये एक फ़र्ज़ नमाज़ से भी सुबुक तर (कमतर) होगा। **7 :** या'नी अ़ज़ाब को **8 :** और येह ख़याल करते हैं कि वाक़ेअ़ होने वाला ही नहीं **9 :** कि ज़रूर होने वाला है। **10 :** और हवा में उड़ते फिरेंगे। **11 :** हर एक को अपनी ही पड़ी होगी **12 :** कि एक दूसरे को पहचानेंगे लेकिन अपने ह़ाल में ऐसे मुब्तला होंगे कि न उन से ह़ाल पूछेंगे न बात कर सकेंगे। **13 :** या'नी काफ़िर **14 :** येह कुछ उस के काम न आएगा और किसी त़रह़ वोह अ़ज़ाब से बच न सकेगा **15 :** नाम ले ले कर कि ऐ काफ़िर मेरे पास आ ऐ मुनाफ़िक़ ! मेरे पास आ। **16 :** ह़क़ के क़बूल करने और ईमान लाने से। **17 :** माल को और उस के ह़ुक़ूक़े वाजिबा अदा न किये।

www.dawateislami.net

الشَّرُّ جَزُوْعًا ﴿۲۰﴾ وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَیْرُ مَنُوْعًا ﴿۲۱﴾ اِلَّا الْمُصَلِّیْنَ ﴿۲۲﴾

पहुंचे[18] तो सख़्त घबराने वाला और जब भलाई पहुंचे[19] तो रोक रखने वाला[20] मगर नमाज़ी

الَّذِیْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآىِٕمُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَالَّذِیْنَ فِیْۤ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ

जो अपनी नमाज़ के पाबन्द हैं[21] और वोह जिन के माल में एक मा'लूम

مَّعْلُوْمٌ ﴿۲۴﴾ لِّلسَّآىِٕلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿۲۵﴾ وَالَّذِیْنَ یُصَدِّقُوْنَ بِیَوْمِ

हक़ है[22] उस के लिये जो मांगे और जो मांग भी न सके तो महरूम रहे[23] और वोह जो इन्साफ़ का दिन सच

الدِّیْنِ ﴿۲۶﴾ وَالَّذِیْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿۲۷﴾ اِنَّ عَذَابَ

जानते हैं[24] और वोह जो अपने रब के अ़ज़ाब से डर रहे हैं बेशक उन के

رَبِّهِمْ غَیْرُ مَاْمُوْنٍ ﴿۲۸﴾ وَالَّذِیْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ﴿۲۹﴾ اِلَّا عَلٰۤى

रब का अ़ज़ाब निडर होने की चीज़ नहीं[25] और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं मगर अपनी

اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَیْرُ مَلُوْمِیْنَ ﴿۳۰﴾ فَمَنِ ابْتَغٰى

बीबियों या अपने हाथ के माल कनीज़ों से कि इन पर कुछ मलामत नहीं तो जो इन दो[26]

وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَالَّذِیْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ

के सिवा और चाहे वोही हद से बढ़ने वाले हैं[27] और वोह जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद की

رٰعُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَالَّذِیْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآىِٕمُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَالَّذِیْنَ هُمْ عَلٰى

हिफ़ाज़त करते हैं[28] और वोह जो अपनी गवाहियों पर क़ाइम हैं[29] और वोह जो

18 : तंगदस्ती व बीमारी वग़ैरा की **19 :** दौलत मन्दी व माल **20 :** या'नी इन्सान की हालत येह है कि उसे कोई ना गवार हालत पेश आती है तो उस पर सब्र नहीं करता और जब माल मिलता है तो उस को ख़र्च नहीं करता। **21 :** कि फ़राइज़े पन्जगाना को उन के अवक़ात में पाबन्दी से अदा करते हैं या'नी मोमिन हैं **22 :** मुराद इस से ज़कात है जिस की मिक़्दार मा'लूम है या वोह सदक़ा जो आदमी अपने नफ़्स पर मुअ़य्यन करे तो उसे मुअ़य्यन अवक़ात में अदा किया करे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि सदक़ाते मुस्तहब्बा के लिये अपनी त़रफ़ से वक़्त मुअ़य्यन करना शर्अ़ में जाइज़ और क़ाबिले मद्ह है। **23 :** या'नी दोनों क़िस्म के मोहताजों को दे, उन्हें भी जो ह़ाजत के वक़्त सुवाल करते हैं और उन्हें भी जो शर्म से सुवाल नहीं करते और उन की मोहताजी ज़ाहिर नहीं होती। **24 :** और मरने के बा'द उठने और ह़श्रो नश्र व जज़ा व क़ियामत सब पर ईमान रखते हैं। **25 :** चाहे आदमी कितना ही नेक पारसा कसीरुत्ताअ़त वल इबादत हो मगर उसे अ़ज़ाबे इलाही से बे ख़ौफ़ होना न चाहिये। **26 :** या'नी ज़ौजात व मम्लूकात **27 :** कि ह़लाल से ह़राम की त़रफ़ तजावुज़ करते हैं। **मस्अला :** इस आयत से मुत़्आ़, लिवात़त, जानवरों के साथ क़ज़ाए शह्वत और हाथ से इस्तिम्ना की हुरमत साबित होती है। **28 :** शरई अमानतों की भी और बन्दों की अमानतों की भी और ख़ल्क़ के साथ जो अ़हद हैं उन की भी और ह़क़ के जो अ़हद हैं उन की भी, नज़्रें और क़समें भी इस में दाख़िल हैं। **29 :** सिद्क़ो इन्साफ़ के साथ, न उस में रिश्तेदारी का पास करते हैं न ज़बर दस्त को कमज़ोर पर तरजीह़ देते हैं न किसी साहिबे ह़क़ का तलफ़े ह़क़ गवारा करते हैं।

www.dawateislami.net

ع ٤٥ ٧ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾ أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾ فَمَالِ الَّذِينَ

अपनी नमाज़ की मुहाफ़ज़त करते हैं[30] येह हैं जिन का बाग़ों में ए'ज़ाज़ होगा[31] तो उन काफ़िरों

كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ﴿٣٦﴾ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٧﴾

को क्या हुवा तुम्हारी तरफ़ तेज़ निगाह से देखते हैं[32] दहने और बाएं गुरौह के गुरौह

أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيمٍ ﴿٣٨﴾ كَلَّا ۖ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ

क्या उन में हर शख़्स येह तमअ़ करता है कि[33] चैन के बाग़ में दाख़िल किया जाए हरगिज़ नहीं बेशक हम ने उन्हें उस चीज़

مِمَّا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾ فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشَارِقِ وَالْمَغَارِبِ إِنَّا لَقَادِرُونَ ﴿٤٠﴾

से बनाया जिसे जानते हैं[34] तो मुझे क़सम है उस की जो सब पूरबों सब पश्चिमों का मालिक है[35] कि ज़रूर हम क़ादिर हैं

عَلَىٰ أَنْ نُبَدِّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٤١﴾ فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا

कि उन से अच्छे बदल दें[36] और हम से कोई निकल कर नहीं जा सकता[37] तो उन्हें छोड़ दो उन की बेहूदगियों में पड़े

وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٤٢﴾ يَوْمَ يَخْرُجُونَ

और खेलते हुए यहां तक कि अपने उस[38] दिन से मिलें जिस का उन्हें वा'दा दिया जाता है जिस दिन क़ब्रों से

مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصُبٍ يُوفِضُونَ ﴿٤٣﴾ خَاشِعَةً

निकलेंगे झपटते हुए[39] गोया वोह निशानों की तरफ़ लपक रहे हैं[40] आंखें

ع ٢ ٨ أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٤٤﴾

नीची किये हुए उन पर ज़िल्लत सुवार येह है उन का वोह दिन[41] जिस का उन से वा'दा था[42]

30 : नमाज़ का ज़िक्र मुकर्रर फ़रमाया गया इस में येह इज़्हार है कि नमाज़ बहुत अहम है या येह कि एक जगह फ़राइज़ मुराद हैं दूसरी जगह नवाफ़िल और हिफ़ाज़त से मुराद येह है कि इस के अरकान और वाजिबात और सुन्नतों और मुस्तहब्बात को कामिल तौर पर अदा करते हैं। **31 :** बिहिश्त के। **32 शाने नुज़ूल :** येह आयत कुफ़्फ़ार की उस जमाअ़त के हक़ में नाज़िल हुई जो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के गिर्द हल्क़े बांध कर गुरौह के गुरौह जम्अ़ होते थे और आप का कलामे मुबारक सुनते और उस को झुटलाते और इस्तिहज़ा करते और कहते कि अगर येह लोग जन्नत में दाख़िल होंगे जैसा कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं तो हम ज़रूर इन से पहले उस में दाख़िल होंगे, उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि उन काफ़िरों का क्या हाल है कि आप के पास बैठते भी हैं और गरदनें उठा उठा कर देखते भी हैं फिर भी जो आप से सुनते हैं उस से नफ़्अ़ नहीं उठाते। **33 :** ईमान वालों की तरह **34 :** या'नी नुत्फ़े से, जैसे सब आदमियों को पैदा किया तो इस सबब से कोई जन्नत में दाख़िल न होगा, जन्नत में दाख़िल होना ईमान पर मौक़ूफ़ है। **35 :** या'नी आफ़्ताब के हर जाए तुलूअ़ और हर जाए ग़ुरूब का या हर हर सितारे के मशरिक़ो मग़रिब का, मक़्सद अपनी रुबूबिय्यत की क़सम याद फ़रमाना है। **36 :** इस तरह कि उन्हें हलाक कर दें और बजाए उन के अपनी फ़रमां बरदार मख़्लूक़ पैदा करें **37 :** और हमारी क़ुदरत के इहाते से बाहर नहीं हो सकता **38 :** अ़ज़ाब के **39 :** महशर की तरफ़ **40 :** जैसे झन्डे वाले अपने झन्डे की तरफ़ दौड़ते हैं **41 :** या'नी रोज़े क़ियामत **42 :** दुन्या में और वोह इस को झुटलाते थे।

www.dawateislami.net